मन्दिर संस्कृति
धार्मिक पर्यटन

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
(*पूर्व जॉइंट डायरेक्टर*)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

MANDIR SANSKRTI : DHAARMIK PARYATAN

Copyright © : Dr. Prabhat Kumar Singhal
Publishing Rights ℗ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-91462-09-3
FIRST EDITION, JANUARY 2022, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Authors or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezabmill Campus, Anwarganj, KANPUR – 208003 (UP) (IN)
Mb: 98999 36803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH)(IN)
Mb: 99561 27040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

अनुज कुमार कुच्छल
सीनियर सेक्शन इंजीनियर,
मध्य – पश्चिमी रेलवे मंडल, कोटा
भारतीय रेलवे, भारत।

प्राक्कथन

मन्दिर पूजा गृह के साथ – साथ सनातन काल से समाज और संस्कृति के विकास की महत्वपूर्ण संरचना है। सृष्टि के सृजन के आधार पंचभूत तत्व आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी हमारी पूजा के प्रमुख अवयव हैं। प्रारम्भिक रूप में समाज प्रकृति पूजक रहा। अनेक पेड़ – पोधों की पूजा वर्तमान समय तक प्रचलित हैं। वैदिक काल में यज्ञों का प्रचलन शुरू हुआ। मूर्ति पूजा की परम्परा उस समय शुरू हुई जब सगुण और निर्गुण भक्ति की धाराएं चल पड़ी। निर्गुण उपासक मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते थे जब की सगुण भक्ति मार्ग वालों को अपनी पूजा करने और ध्यान केंद्रित करने के लिए एक प्रतीक की आवश्यकता महसूस हुई। उन्होंने इसके लिए मूर्ति का विकल्प चुना। मूर्तियां बनाई जाने लगी और वे मूर्ति पूजक बन गए। प्रारम्भ में किसी चबूतरे पर मूर्ति रख कर पूजा जाने लगा। हमारे धार्मिक एवं पौराणिक कथानक के आधार पर

देवी – देवताओं के रूप के आधार पर मूर्तियां बनाई जाने लगी।

जैसे – जैसे समय का चक्र चलता गया चबूतरे के चारों ओर दीवारें और फिर छत बनाई जाने लगी। सपाट छत आगे चल कर शिखर में बदल गई जिसे वितान कहा जाता है। सम्पूर्ण भारत में विभिन्न काल के शासकों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार अपने ईष्ट देव की श्रद्धा में और आमजन द्वारा पूजा के लिए मंदिरों का निर्माण प्रारम्भ कराया। शुरू में बने सादे मंदिरों में अलंकरणों का उपयोग किया जाने लगा जो क्रमिक विकास के साथ – साथ बढ़ता गया। मन्दिर की विभिन्न शैलियों का विकास हुआ और भव्य रूप में कारीगरी पूर्ण मन्दिर बनाए जाने लगे। मन्दिर में मुख्य देव प्रतिमा के स्थान को गर्भ गृह, भक्तों के एकत्रित होने वाले स्थान को सभा मंडप, नृत्य आदि उत्सव आयोजन के लिए जगमोहन, गर्भ गृह के चारों और प्रदक्षिणा पथ आदि बनाए गए।

पौराणिक धार्मिक प्रसंगों के घटना स्थलों पर सम्बन्धित देवी – देवता के स्वरूपों उनके परिवार आदि के विभिन्न चरित्रों के आधार पर मन्दिर बनाए गए। सभी स्थानों पर जहां जिसका मन्दिर बना है वह किसी न किसी पौराणिक कथा से जुड़ा है। कही देवी के, गणेश जी के, शिव और शिव परिवार के, हनुमान जी के, हनुमान जी के साथ राम – सीता – लक्ष्मण के, विष्णु के विभिन्न रूपों के तो कहीं अन्य देवी – देवता के मन्दिर बनवाए गए। पावन, पवित्र और धार्मिक नगरों को सप्तपुरी कहा गया। उत्तर में केदारनाथ,दक्षिण में रामेश्वरम,पूर्व में जगन्नाथ पुरी और पश्चिम में द्वारिका चार धाम कहलाए गए। उत्तरांचल की पहाड़ियों में स्थित बद्रीनाथ, केदारनाथ,गंगोत्री और यमुनोत्री को हिमालय के लधु चार घाम कहा जाने लगा। जहां – जहां माता सती के अंग और आभूषण गिरे वह स्थान शक्ति पीठ बन गए। देश में बारह स्थानों पर भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग स्थापित हैं। नदियों के किनारे घाटों

के निर्माण कराए गए जिससे भक्त स्नान कर शुद्ध हो कर मन्दिर में दर्शन कर सकें।

मन्दिर में पत्थर से बनी मूर्ति निर्जीव नहीं है वरन् सजीव प्रतिमा है, इसका एहसास बनाए रखने के लिए मन्दिर में स्थापित करने से पूर्व विधि विधान से प्राण प्रतिष्ठा कराई जाने का अनिवार्य नियम बनाया गया। मन्दिर की अपनीआचार संहिता बनाई गई। सजीव मान कर प्रतिमा को भोग लगाने, ऋतुओं के आधार पर वस्त्र धारण कराने, सुबह – शाम आरती करने , दैनिक दिनचर्या शुरू करने से पूर्व स्नान कर शुद्ध होकर दर्शन के लिए मन्दिर जाने आदि के नियम बनाए गए। सदाचार और ज्ञान के प्रसार के लिए मंदिरों में सत्संग, कीर्तन, संतों के प्रवचन एवं अन्य धार्मिक और आध्यात्मिक विकास के कार्यक्रम आयोजित करने के प्रावधान किए गए।

हिन्दू धर्म के विभिन्न मतावलंबियों द्वारा अपने ईष्ट देव की पूजा के लिए अपने – अपने नियम एवं पूजा पद्धति निर्धारित की गई। देवी – देवताओं के जन्मदिन और उनसे जुड़े अन्य प्रसंगों के दिनों को उत्सव के रूप में मनाया जाने लगा। इन स्थानों पर विभिन्न अवसरों पर मेले जुड़ने लगे जो सांस्कृतिक आदान – प्रदान का सबल माध्यम बने।

मन्दिर धार्मिक विचारों से समाज में समरसता और सद्भाव बढ़ाने के साथ रोजगार और व्यापार विकास का भी बड़ा माध्यम बने। मन्दिर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए यातायात, होटल, पूजा सामग्री आदि विभिन्न सुविधाओं के लिए लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। विभिन्न व्यवसाय फलते – फूलते हैं। मंदिरों पर आधारित धार्मिक पर्यटन व्यवसाय को विशेष प्रोत्साहन मिला है। यही नहीं, मन्दिर संचालन प्रशासन द्वारा आगंतुकों के लिए समय – समय पर अनेक सुविधाओं का विकास किया जाता है।

मन्दिर संस्कृति की इस रूपरेखा के साथ पर्यटन विषय के विशेषज्ञ लेखक डॉ.प्रभात कुमार सिंघल की यह पुस्तक आपके हाथों में है। पुस्तक में मंदिरों के प्रादुर्भाव के साथ – साथ भारत के चार धाम, सप्तपुरी शहर, देवी के 51 शक्तिपीठों, शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंग, यूनेस्को द्वारा घोषित भारत के विश्व विरासत मन्दिर, उत्तर भारत के प्रमुख मन्दिर एवं दक्षिण भारत के प्रमुख मन्दिर सहित कुल 8 अध्यायों में मन्दिर संस्कृति को बखूबी रोचक रूप से हृदय ग्राही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

विश्वास करता हूं कि यह पुस्तक भारत के प्रतिनिधि मंदिरों की जानकारी देने और धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने में सफल होगी। मैं लेखक को उनके श्रम साध्य कार्य के लिए अपनी और से बधाई देते हुए पुस्तक की सफलता की कामना करता हूं। आशा हैं पाठक इस कृति का स्वागत करेंगे।

अनुज कुमार कुच्छल

371, अम्बेडकर कोलोनी,कुन्हाड़ी,

कोटा,राजस्थान,भारत

मो.न. +91 90010 17251

लेखकीय

मन्दिर केवल धर्म से ही नहीं वरन समाज से जुड़ी सम्पूर्ण संस्कृति का महान द्योतक हैं। प्राचीन शास्त्रों में निर्धारित वास्तु नियमानुसार मंदिरों का निर्माण किया जाता रहा हैं, जिससे मंदिर में आने वाले को सकारात्मक ऊर्जा और मन को शांति मिलती है। धर्म एवं आध्यात्मिक महत्व के साथ–साथ मंदिरों का, शिल्पियों को रोजगार देने, संगीत, नृत्य,ललित कलाओं का संरक्षण करने, चढावे से शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करने, संतों के धार्मिक प्रवचनों से ज्ञान का प्रसार एवं अन्न भंडारों से पशुओं को चारा और भूखों को भोजन कराने में महत्व पूर्ण योगदान रहा हैं। हाल ही में विश्व व्यापी कोरोना बीमारी में भारत के मंदिरों का खजाना देश की मदद में काम आया। संस्कृति संरक्षण में सहायक हमारे प्राचीन और अधुनातन मन्दिर भारत में पर्यटन विकास में भी अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। श्रद्धालु जब किसी मन्दिर के दर्शनार्थ यात्रा करते हैं तो समीप के अन्य दर्शनीय स्थलों का भी भ्रमण करते हैं।

मंदिरों में देव दर्शन के लिए प्राचीन समय से ही धार्मिक यात्राओं का प्रचलन रहा है जो वर्तमान में भी अनवरत जारी हैं। साधनों के अभाव में पहले श्रद्धालु पैदल यात्राएं किया करते थे । आस्था और श्रद्धा की वजह से आज भी पैदल यात्रा की जाती है। श्रद्धालु सैंकड़ों किमी पैदल चलते हैं और मंदिरों में पहुंच कर भक्ति भाव से अपनी श्रद्धा अर्पित कर दर्शन करते हैं। लोग बढ़–चढ़ कर इनकी सुविधाओं के लिए जगह–जगह भंडारे कर भोजन, विश्राम आदि सुविधाएं उपलब्ध करा कर पुण्य कमाते हैं।

प्राचीन काल से विभिन्न शैलियों में निर्मित भारत के मंदिरों की शिल्प और वास्तु कला अपने जादुई सम्मोहन से दुनिया भर के

पर्यटकों को आकर्षित करती है। यही वजह भी रही की यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में भारत के अनेक मंदिरों को भी विश्व धरोहर घोषित किया गया है। मंदिरों की भव्यता और अकल्पनीय वास्तु कला को देख कर पर्यटक आश्चर्यचकित रह जाते हैं। वास्तव में यह कोतूहल का विषय है कि कैसे उन अनाम शिल्पियों ने जब की वर्तमान की तरह इंजीनियरिंग नहीं थी कैसे इन भव्य और विशाल मंदिरों का निर्माण किया होगा ? बड़ी–बड़ी पाषाण चट्टानों को काट कर एक ही चट्टान में अकल्पनीय मन्दिर की रचना देख कर अनाम शिल्पियों के प्रति हमारा सर श्रद्धा से झुक जाता है। मंदिरों का विभिन्न शैलियों में निर्माण शासकों की धर्म और कला संरक्षण में रुचि की वजह से ही संभव हो सका।

भारत अपने गौरवशाली इतिहास, समृद्ध विरासत, सांस्कृतिक विविधता और अनूठी परंपराओं के साथ–साथ अपने मंदिरों और धार्मिक स्थलों के लिए जाना जाता है। हिंदू पौराणिक कथाओं में अनगिनत देवता हैं और सम्पूर्ण भारत में इन देवताओं को समर्पित सैकड़ों और हजारों मंदिर हैं। उत्तर भारत के प्रसिद्ध मंदिर और दक्षिण के मंदिरों के वास्तु शिल्प में काफी अंतर है जो इन्हें एक दूसरे से काफी अलग बनाते हैं। ज्यादातर लोग उत्तर भारत के मंदिरों में दर्शन करने जाते हैं जब कि दक्षिण के मन्दिर भी ऐतिहासिकता, धार्मिक और वास्तु शिल्प में किसी से कम नहीं हैं, वरन एक कदम आगे ही हैं।

आधुनिक समय में भी मंदिरों का निर्माण, पुनरोद्धार एवं मन्दिर संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के प्रयास अनवरत जारी है। हाल ही में वाराणसी में गंगा के घाट पर काशी विश्वनाथ मंदिर के भव्य कोरिडोर का उद्‌घाटन प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा किया गया है। हिमालय के चार धामों, वैष्णोदेवी, का विकास और अयोध्या में भव्य श्रीराम मन्दिर का निर्माण , उज्जैन में महाकाल परिसर का

विकास और गंगा के घाटों का विकास जैसे उदहारण हमारी मन्दिर संस्कृति के संरक्षण और विकास के प्रयासों की कहानी कहते हैं। मंदिरों को राज्याश्रय की प्राचीन परम्परा निरन्तर जारी हैं।

सनातन धर्म के समय से ही भारत के सप्तपुरी शहर, भारत के चार धाम, हिमालय के लघु चार धाम, देवी के 51 शक्ति पीठ, द्वादश ज्योतिर्लिंग और अन्य मन्दिर भारत में धार्मिक संस्कृति को जीवित रखने और देश की एकता को बनाए रखने में अपनी भूमिका निभा रहें हैं। भारत की ऐसी ही मन्दिर संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रतिबिंबित करती इस कृति के माध्यम से पाठकों तक पहुंचने का अकिंचन प्रयास किया है।

पुस्तक की रचना में विविध प्रकार सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए मैं सर्व श्री अनुज कुमार कुच्छल, सीनियर सेक्शन इंजीनियर, भारतीय रेलवे, कोटा, डॉ. बी.के.शर्मा, से. नि.प्रो.इतिहास,जयपुर, प्रो.प्रमोद कुमार सिंघल, से. नि. प्राचार्य राजकीय कन्या महाविद्यालय,बूंदी, श्रीमती शिखा अग्रवाल, लेखिका भीलवाड़ा, डॉ.रुचि गोयल, रुचि हस्पताल,कोटा, डॉ.दीपक कुमार श्रीवास्तव, संभागीय अधीक्षक एवं शशि जैन सहायक प्रभारी राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय, कोटा, एडवोकेट अख्तर खान 'अकेला', कोटा, वरिष्ठ पत्रकार के. डी.अब्बासी,कोटा, मोहन लाल गुप्ता, से. नि. सहायक निदेशक सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान सरकार, जोधपुर, पवन शर्मा, जनसंपर्क अधिकारी, राजस्व मंडल,अजमेर, एल. एन.शर्मा, से. नि. पुस्तकालयाध्यक्ष, सूचना केंद्र,जयपुर, हेमन्त कुमार पाराशर, से. नि. पुस्तकालयाध्यक्ष, सूचना केंद्र,कोटा, पत्रकार सलीमुद्दीन काजी एवं श्रमती तकसीम बानो का ह्रदय के गहनतम तल से आभार व्यक्त करता हूं।

पाठकों के सम्मुख यह कृति प्रस्तुत हैं। आशा करता हूं कि यह

पुस्तक मंदिरों की जानकारी देते हुए धार्मिक पर्यटन में सहायक होगी। आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

शुभकामनाओं सहित!

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल

अनुक्रम

(1) मन्दिर संस्कृति का प्रार्दुभाव 1-11

(2) भारत के चारधाम..2-28

(3) सप्तपुरी 29-38

(4) देवी के 51 शक्तिपीठ... 39-51

(5) द्वादश ज्योतिर्लिंग 52-62

(6) विश्व विरासत मन्दिर–यूनेस्को की सूची में शामिल 63-84

(7) उत्तर भारत के प्रमुख मन्दिर...85-123

(8) दक्षिण भारत के प्रमुख मन्दिर 124-142

सन्दर्भ

1. Majumdar, R.C., The History And Culture Of India People, Bombay, 1957.

2. Deva, Krishna, Temples Of North India, National Book Trust, India, 1969.

3. Rajendra Behari Lal, Gujarat, Part 3," People of India: State series, Anthropological Survey of India, Popular Prakashan, 2003,

4. भारती, मीनाक्षी कासलीवाल, भारतीय मूर्ति शिल्प एवं स्थापत्य कला, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2009.

5. त्रिवेदी, एस. डी.,बुंदेलखंड का पुरातत्व, झांसी, 1984.

6. दीक्षित, उमेश दत्त – अनुवादक, श्री निर्वासन, आर.के.,मूल लेखक, दक्षिण भारत के मन्दिर, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1995.

7. जैन,(डॉ.) आर.के., जैन तीर्थ वंदना एवं दर्शनीय स्थल, कोटा, 2012.

8. डॉ.सिंघल,प्रभात कुमार ;कुच्छल, अनुज कुमार, भारत की विश्व विरासत – यूनेस्को की सूची में शामिल, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर, 2021.

9. डॉ.सिंघल, प्रभात कुमार, राजस्थान के आस्था स्थल, विदित पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 2018.

10. डॉ.सिंघल, प्रभात कुमार, हमारा भारत हमारी शान, वीएसआरडी एकेडमिक पब्लिशिंग, मुंबई, मार्च 2021.

11. डॉ.सिंघल, प्रभात कुमार, आराध्य तीर्थ, मंजु प्रकाशन, कोटा, 2015.

12. गूगल सर्च, विकिपीडिया अन्य सोशल साइट.

13. हिंदी समाचार पोर्टल प्रभा साक्षी– नई दिल्ली, अमर उजाला– नई दिल्ली, प्रेस नोट– उदयपुर एवं हिंदी मीडिया– मुंबई, चलते फिरते – नई दिल्ली.

14. अमरनाथ यात्रा प्रकृति दर्शन और अध्यात्म का योग (सीएमएस). नवभारत टाइम्स, 17 सितंबर 2011 को पुरालेखित.

15. विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित डॉ.सिंघल के आलेख.

16. लेखक द्वारा मन्दिर पर्यटन के अपने अनुभव.